14-2-67 ओम शान्ती रात्री क्लास

बाप समझाते है और बच्चे जानते है कि भारत खास और दुनिया आम को यह संदेश देना है। तुम सभी संदेशी हो। बहुत खुशी का संदेश सबको देना है कि भारत अब फिर से स्वर्ग बन रहा है। अथवा स्वर्ग की स्थापना हो रही है भारत में। बाप जिसको हैवनली गाड फादर कहते है वो ही स्थापन करते है। तुम बच्चों को डायरेक्शन है कि यह खुशखबरी भारतवासियों को अच्छी रीती समझाओ। तुम्हारा और धर्म वालो से कनेक्शन नही है। हर एक को अपने धर्म की तात रहती है। तुमको अपनी तात। औरों के धर्म कैसे स्थापन हुये उसमें टाइम लगता क्या है जाता है। तुम खुश खबरी सुनाते हो भारत में सूर्यवंशी देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। अर्थात भारत फिर स्वर्ग बन रहा है। यह खुशी अन्दर में रखनी है कि हम स्वर्ग के मालिक बन रहे है। जिनको यह खुशी अन्दर में है उनको दुःख तो कोई भी किस्म का नां होना चाहिये। यह तो बच्चे जानते है नई दुनिया स्थापन होने में तकलीफ तो होती ही है। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते है। बच्चों को यह सदेव स्मृती में रहना चाहिये कि हम भारत को बेहद की खुशखबरी सुनाते है। जैसे बाबा ने पर्चे छपवाये है। बहनो भाईयों आकर यह खुशखबरी सुनो। सारा दिन यही खयालात चलती है कैसे किसी को यह संदेश सुनायें। बेहद का बेहद का वर्सा देने आये है। इन ल.न. के चित्र को तो देख कर सारा दिन हर्षित रहना चाहिये। तुम तो बहुत बड़े आदमी बनते हो। इसलिये तुम्हारी कोई भी जंगलीपन, रैप्स की चलन नही होनी चाहियें। तुम जानते हो हम बन्दर से भी बदतर थे। अब बाबा हमको ऐसा बनाते है। तो कितनी खुशी होनी चाहिये। परन्तु वण्डर है बच्चों को वो खुशी रहती नही है। बैठे नां ही उस उमंग से सबको खुशखबरी ही सुनाते है। बाप ने तुमको मैसेन्जर बनाया है। सभी के कान पर यह मैसेज देते रहो। भारतवासियों को यह पता ही नही कि हमारा यह आदी सनातन देवी देवता धर्म कब रचा गया। फिर कहाँ गये। अब तो सिर्फ चित्र है। और सभी धर्म है। सिर्फ आदी सनातन देवी देवता धर्म ही नही। भारत में ही चित्र है। ब्रह्मा दवारा स्थापना करते है। सिर्फ बाप को पत्थर भित्तर में डाल दिया है। ब्रह्मा देवतायें नमः विष्णु देवतायें नमः कहते है। अब ठिक्कर भित्तर को कैसे नमः करेंगे। तब बाप कहते है भारतवासियों की कितनी रैप्स बुधी हो गई है। रामायण में क्या-2 बैठ लिखा है। इसलिये बाबा ने समझाया है हमेशा बोलो शिव भगवानोवाच्य...नही तो बन्दर गुरु-गुरु करते है। कब चिऊटी पाने भी लग पड़ेंगे। आगे चल कर शायद कुछ चिऊटी भी खावेंगे। बच्चों को बाप कहते है सबको यही खुशखबरी सुनाते रहो तो तो तुमको भी अन्दर में खुशी रहेगी। प्रदर्शनी में भी खुशखबर सुनाते होंगे नां। बेहद के बाप से आकर स्वर्ग का वर्सा लो। आदी सनातन देवी देवता धर्म वाले स्वर्ग के मालिक थे। यह (ल.न.) स्वर्ग के मालिक थे नां। फिर वो कहाँ गये? यह कोई भी समझते नही है इसी लिये कहा जाता है कि सूरत मनुष्यों की सीरत बन्दरों की। अभी तुम्हारी सूरत मनुष्यों की है सीरत देवताओं की बन रही है। तुम जानते हो हम फिर से सर्वगुण सम्पन्न ... बनते है। फिर औरों को भी सही पुरुषार्थ कराना है। प्रदर्शनी की सर्विस तो बहुत अच्छी है। जिनको गृहस्थ व्यवहार का बन्धन नही, वानप्रस्थी है अथवा विधवायें है, कुमारियां है, इनको तो इसी सर्विस में लग जाना चाहिये। इस समय शादी करना तो बरबादी करना है, नां करना आबादी करना है। बाप कहते है यह मृत्यु लोक है, पतित दुनियां, विनाश हो रहा है, तुमको पावन दुनियां में चलने का है तो इस समय सर्विस में लग जाना चाहियें। प्रदर्शनी पिछाड़ी प्रदर्शनी करनी चाहिये। सर्विसएबुल बच्चे जो है जैसे कुरूक्षेत्र वाला लक्ष्मण बच्चा है उनको सर्विस का शौक अच्छा है। बाबा से कोई-2 पूछते है हम सर्विस छोड़े? बाबा देखते है लायक है तो छुट्टी देते है भल सर्विस में लगो। ऐसी खुशखबरी सबको सुनानी है। बाप कहते है अपना राजभाग आकर लो। तुमने 5000 वर्षा पहले राज्यभाग्य लिया था। अब फिर से लो। सिर्फ मेरी मत पर चलो। बन्दरपना छोड़ दो। बन्दर में सब विकार होते है नां। अभी तो मनुष्यों को बन्दर से भी बदतर कहा जाता है। चलन ऐसी है।